

विचारों का आदान-प्रदान एवं सूचना प्रसारण

भौतिक दृष्टि से कम्युनिकेशन का विकास बहुत द्रुत गति से हो रहा है। परन्तु मानवीय स्तर पर उसका टूट-फूट हुआ है। लोगों का आपसी व्यवहार खुले दिल से नहीं हो रहा है। समाज तथा परिवार के सदस्यों में भी स्पष्टवादिता का सच्चा संबंध नहीं रहा है। इसका दुष्परिणाम आपसी सम्बन्धों में दुराव, तनाव, दबाव, उदासीनता, घृणा, विरोध, कलह, आपसी फूट आदि में हुआ। सभी स्तरों पर सम्बन्धों में खींचतान हो रही है और आत्मियता-प्रेम भावना का अभाव हो रहा है।

यह एक आश्चर्य की बात है कि कई लोगों का दिल टुटा हुआ है और विश्व में कलुषित संबंध हुए हैं। अकेलापन, दुःखी, अपमानित और निरादर परिस्थितियों में प्राप्ति भी कुछ आरामदायी व्यवस्था नहीं दे रही है। वस्तुतः लोग सच्चे निःस्वार्थ प्रेम के बूंद-बूंद के प्यासे हैं जो प्रेम मानव के आन्तरिक शान्ति तथा आनंद का मूल आधार है। सभी स्थान पर सरकारी मंत्रालय और विभागीय संस्थाओं व्यवस्था करते हैं और बाहरी भौतिक तरीके विकसित कर रहे हैं। परन्तु आन्तरिक-आत्मिक-आध्यात्मिक जैसे महत्व के आधारभूत क्षेत्र में उनका उतना ध्यान नहीं है।

सर्वशक्तिवान परमात्मा ने प्रत्येक व्यक्ति को 'मन' दिया है। जो बाहरी सूचनाओं का भी रचयिता है जिसे हम 'कम्प्यूटर और कम्युनिकेशन' भी कह सकते हैं। "मन" अति तीव्र गति से सूचना देता है। यह वैचारिकता की गति -वैज्ञानिकों के प्रकाश की गति से भी अति तीव्र है। मन के सकारात्मक प्रकम्पन सूचना देने में अति शक्तिशाली है। इन पवित्र प्रकम्पनों द्वारा हम उन लोगों के दिलों के भी कपाट खोल सकते हैं और सम्बन्धों में सुपरिणाम ला सकते हैं।

मन जब शक्तिशाली और व्यर्थ विचारों से इर्ष्या, द्वेष, क्रोध, बदला लेने की भावना, कामवासना, लोभ, मोह तथा अहंकार से अलग होकर पवित्र अवस्था में तब सकारात्मक प्रकम्पन द्वारा पवित्रता की शक्ति बढ़ने पर उसका प्रभाव बढ़ा है। निर्विकारी मन, वायरलेस की तरह है। मन वातावरण में परिवर्तन कर दूर-दूर तक लोगों को मानसिक सूचनायें प्रेषित कर सकता है।

जब हम किसी भावना, विचार, अनुभव या सूचना को अन्य लोगों तक पहुँचाना चाहते हैं तब हमें यह मालूम हो कि हम किस प्रभावशाली विधि से हम पहुँचा सकेंगे। अच्छे सूचना वाहक बनने के लिए स्पष्टता एवं मन के अन्दर की स्वच्छता ही आधारभूत है। हमारा उद्देश्य एवं भावना-शब्द, बर्ताव, प्रकम्पन और व्यवहार द्वारा स्पष्ट हो। जब मेरी अपनी भावनायें शुद्ध हैं तब अन्य लोग मेरी भावनाओं को समझ सकेंगे। जब तक मेरे कहने का भाव स्वयं को ही स्पष्ट नहीं है तब तक तो वह लोग भी ठीक रीति से ग्रहण नहीं कर पायेंगे।

जब हम कहते हैं-'आपको यह समझ में नहीं आ रहा है' तो हो सकता है कि हमें भी उसकी गहराई मालूम नहीं है। इसीलिए दुबारा संदेश, सूचना देनी पड़ी। महसूसता एवं प्रकम्पन तो आ रहे हैं। भले ही बोले हुए शब्द एकदम भिन्न अर्थ के लगते हैं। दूसरी बात यह हो सकती है कि संदेश जिसे आप किसी अन्य आन्तरिक सूचना में व्यस्त है या वह ऐसे विचारों में मग्न है जो वह सूचना सुनता हो या न भी सुनता हो।

अच्छा वार्तालाप दोनों की समझ पर निर्भर है। हमें धीरज, ईमानदारी, स्पष्टता और खुले दिल से वार्तालाप करने पर ही वह प्रभावशाली तथा परिणाम कारक होगा जब हमारे -'सुनने के कान' विकसित हो तब और जो कहना चाहते हैं उसे वैसा ही सुनकर ठीक समझ पायेंगे, भले ही आने वाला संदेश ठीक हो या उलझा हुआ हो। हम वह संदेश पढ़ सकेंगे तथा उनके शब्दों की भावनायें समझ पायेंगे। दूसरों को ठीक समझ में आ सके तो वे स्वयं हमारा सम्मान करेंगे। यह एक प्रकार का सशक्तिकरण है। इन दिनों ये बहुत लोग समझते हैं कि उनका कहना सुनने वाला कोई है ही नहीं तथा उन्हें कोई समझना नहीं चाहते। इसलिए अच्छे सुनने वाले बनो।

सूचना एवं प्रसारण में आने वाले बाधाओं को पार करना

सूचना एवं प्रसारण में आने वाले बाधाओं को जैसे परिवार और संस्कृति में विविधता, स्वभाव संस्कार और अनुभव में मत मतान्तर तथा भाषा और बोलने का उद्देश्य को ध्यान में न लेते हुए हम अन्य श्रोतो से वार्तालाप प्रारंभ कर देते हैं। भले ही अपनी ओर से आने वाले अवरोधों को कुछ हद तक अलग रख देते हैं। यह भी जानते हुए कि अन्य लोग इन्हें पार नहीं कर सकेंगे। आत्मीयता 'एक ऐसी पद्यति है जो हमारे आन्तरिक और लोगों के बीच के अवरोधों को समाप्त कर सकती है।' जब मैं अपने को एक अविनाशी आत्मा शरीर से अलग समझता हूँ तब मेरे विचारों को स्वभाव संस्कारों में सरलता आती है। मैं अन्य व्यक्तियों को भी आत्मिक भाव से देखने में समर्थ हो जाता हूँ तब आयु, शिक्षा, लिंग, राष्ट्रीयता, रंग, रूप आदि का भेद समाप्त हो जाते हैं।

जब हम अपने को आत्मिक स्वरूप में स्थित करने में समर्थ हो जाते हैं तब हमारे विचार बहुत शान्त और स्पष्ट हो जाते हैं। परन्तु जहाँ कुछ व्यर्थ विचार हैं वहाँ विचारों को कुछ अधिक बल देना पड़ता है। जब भौतिकता से उठे हुए व्याकुल करने वाले विचार समाप्त हो जाते हैं तब हमारी वैचारिक भूमिका तर्क संगत बन जाती है। इस प्रकार हम शक्तिशाली विचार और कल्याणकारी भावनायें अन्य लोगों तक पहुँचा सकते हैं। इसके लिए कुछ अधिक प्रयास या स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं होती। जब मन शान्त व स्थिर है तब हमारी बुद्धि भी शुद्ध रूप से कार्य प्रारम्भ कर देती है। बुद्धि, जो हमारा सज्ञानता का तीसरा नेत्र है। जिससे अनुभव का नेत्र खुलता है तो वह दिव्य ज्ञान हमारे विचारों को योग्य दिशा देता है। कर्म करते रहने से या सिर्फ विचारों में रहने से यह अच्छा है कि सुज्ञानता से कार्य करें। यथार्थ को जानने की शक्ति, प्रेरणा देने की शक्ति और अनुभव की शक्ति जब एक साथ कार्य करती है तो हम सच्चाई को समझने में समर्थ होते हैं। इसलिए यह अच्छा है कि वार्तालाप हमारे अनुभव के आधार पर एवं समझ और अन्तः प्रेरणा तथा दूर दृष्टि पर हो तभी हमें सुखद और लाभप्रद अनुभव होगा।

अन्तःकरण द्वारा वार्तालाप

बहुत से लोग भावनात्मक होते हैं। एक कहावत भी है- "जो बोलो दिल से बोलो"। जब हम अन्दर की भावनायें समझकर व्यक्त करते हैं। वह केवल बौद्धिक व तर्क से वार्तालाप करने से अधिक प्रभावित करने वाली होती है। बहुत लोग अधिक भावना प्रधान होने से तर्कता से हट जाते हैं और वास्तविकता से दूर हो जाते हैं। सही बुद्धिमत्ता वह है जहाँ दिल तथा अनुभव और समझदारी से कार्य किया जाता है। यह संतुलन विकसित करने के लिए हमारी शक्तिशाली बुद्धि जो भावना के अधीन न हों, साथ में पवित्र भावनायें भी हों। यह संतुलन हमारी सूचना सही समय पर लोगों तक पहुँचा सकती है यदि हम लोगों से वार्तालाप करना चाहे तो आन्तरिक दृष्टि से हमें भलि-भाँति समझदार बन स्वयं को भी समझना होगा। यदि हमें अन्यो की भावनाओं को समझना है तो हमें स्वयं को भी समझना आवश्यक है अर्थात् दूसरों की भावनाओं को भी स्वीकार कर उन्हें धन्यवाद देना पड़े।

यदि मार्गदर्शन करना है तो अपनी भावनाओं को भी समझना होगा जो कि जरूरी है। समझदार मनुष्य भावनाओं को दबायेगा नहीं परन्तु उस शक्ति का उपयोग सकारात्मक दृष्टि से करेगा। इस प्रकार आन्तरिक वार्तालाप, विचार और भावना के समन्वय पर अधिकार प्राप्त होने से वार्तालाप बहुत मीठा और शक्तिशाली होगा।

सम्बन्ध-सम्पर्क में वार्तालाप

प्रभावशाली वार्तालाप तथा आन्तरिक परीशिक्षणों के लिए आपसी सम्बन्ध सुधारना परम आवश्यक है। सर्व प्रथम अपने आप से सम्बन्ध अच्छा हो अर्थात् आत्मीय सम्बन्ध अपने आप को यथार्थ जानना, समझना और स्वीकार करना आवश्यक है। स्वयं को जानने के साथ-साथ सकारात्मक विचार, पवित्र भावनायें और दिव्य बुद्धि का होना आवश्यक है। यह बात मैं किस विधि से करता हूँ, उसका परिणाम मेरे और अन्य व्यक्तियों के सम्बन्धों पर क्या होता है? संतुलित व्यक्ति का वार्तालाप ठीक न होने पर भी वह किसी को दोष नहीं देता परन्तु स्वयं में सुधार लाने का प्रयत्न करता है। इसके लिए मुझे परमपिता परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ना होगा। परम आत्मा-वह

आत्मा है जो 'बुद्धिमानों की बुद्धि है।' तथा उसके समर्थ विचार है अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र एवं शान्त भावनायें हैं। ईश्वर जो ज्ञान का सागर, वरदानों का भण्डार और प्यार का सागर है वह अच्छी तरह उन्नति और पालना करता है और मदद देता है। जिससे मेरा तथा अन्य व्यक्तियों का वार्तालाप बहुत प्रभावशाली हो जाता है।

जैसे सेटेलॉइट होने से बाहरी संदेश वाहन का कार्य विकसित हो जाता है। इसी प्रकार 'राजयोग' वह जिससे प्रेम जुट जाता है और सूचना वार्तालाप तथा मन की शुभ भावना की शक्ति सारे विश्व को देने में सहायक हो जाता है और सूक्ष्म प्रभाव डालता है, जिससे नकारात्मकता या विकारों का दहन हो जाता है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com